Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
March 2024 5(3), 1998–2002

ROLE OF STATE AND COMMUNITY IN PRESERVATION OF SHAIVA TRADITIONS (WITH SPECIAL REFERENCE TO BILASPUR DISTRICT)

शैव परम्पराओं के संरक्षण में राज्य और समुदाय की भूमिका (बिलासपुर जिले के विशेष संदर्भ में)

Anju Tiwari [1], Mahendra Kumar Dubey [2]

[1] Research Director cum Professor Department of Social Sciences (History), Dr. C.V. Raman University, Kargi Road, Kota, Bilaspur (CG), India
[2] Research Scholar Social Sciences Department (History) Dr. C.V. Raman University, Kargi Road, Kota, Bilaspur (CG), India

ABSTRACT

English: Shaiva traditions have been an integral part of Indian culture and religion, whose deep Shaiva roots have spread in this land for thousands of years. Both the state and the community have played an important role in preserving these traditions. While the state has been actively involved in preserving and promoting religious traditions through its policies and programmes, the community has fulfilled its social and religious responsibilities to keep these traditions alive. At the state level, the maintenance of religious places, preservation of Shaivite temples, promotion of Shaivite literature and scriptures, and promotion of the importance of Shaivite cultures have been important aspects. These traditions pervade various social aspects of the family and society, such as worship, festival celebrations and expressions of faith. The followers of the Shaivite sect perform their religious duties by following these traditions in their daily lives. This not only preserves traditions, but also builds religious tolerance and unity in the society. The aim of this research is to understand how both the state and the community preserve and promote Shaivite traditions.

Hindi: शैव परम्पराएँ भारतीय संस्कृति और धर्म का अभिन्न हिस्सा रही है, जिनकी गहरी शैव हजारों वर्षों से इस भूमि में फैली हुई है। इन परम्पराओं को संरक्षित करने में राज्य और समुदाय दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। राज्य, अपनी नीतियों और कार्यक्रमों के माध्यम से धार्मिक परम्पराओं को संरक्षण देने और बढ़ावा देने में सक्रिय रूप से भागीदार रहा है, वही समुदाय ने इन परम्पराओं को जीवित रखने के लिए अपने सामाजिक और धार्मिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह किया है। राज्य के स्तर पर धार्मिक स्थलों की देखरेख, शैव मंदिरों का संरक्षण, शैव साहित्य और ग्रंथो का प्रोस्ताहन, और शैव संस्कृतियों के महत्व को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण पहलू रहे हैं। यह परम्पराएँ परिवार और समाज के विभिन्न सामाजिक पहलुओं में व्याप्त हैं. जैसे पूजा-पाठ, पर्व उत्सव और आस्था की अभिव्यक्तियाँ। शैव वर्ग के अनुयायी अपने दैनिक जीवन में इन परम्पराओं का पालन करते हुए अपने धार्मिक कर्तव्यों को निभाते है. जिससे न केवल में परम्पराएँ संरक्षित होती है, बल्कि समाज में धार्मिक सहिष्णुता और एकता भी बनती है। इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि राज्य और समुदाय दोनों शैव परम्पराओं को कैसे संरक्षित और बढ़ावा देते हैं।

Keywords: Shaiva Traditions, Religious Patronage, Role of State, Contribution of Community, Cultural Heritage, Shaiva Temples, Protection of Religious Places, Shaiva Literature, Shaiva Cultures Faith and Beliefs, Social Integration, Religious Tolerance, शैव परम्पराएँ, धार्मिक संरक्षण, राज्य की भूमिका, समुदाय का योगदान, सांस्कृतिक धरोहर, शैव मंदिर, धार्मिक स्थलों का संरक्षण, शैव साहित्य, शैव संस्कृतियाँ आस्था और विश्वास, सामाजिक एकता, धार्मिक सहिष्णुता

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i3.2024.6157

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

भारत में शैव धर्म एक प्राचीन और व्यापक धार्मिक परंपरा है, जो भगवान शिव की पूजा और भक्ति पर आधारित है। यह धर्म केवल धार्मिक अनुशासन का पालन करने तक सीमित नहीं है, बल्कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक, सामाजिक और दार्शनिक धारा में गहरी जड़े जमा चुका है। शैव परंपराओं का विभिन्न रूपों में विकास हुआ, जिसमें शैव सिद्धात (शैवसिद्धांत), पाशुपत शैव धर्म, कश्मीर शैव धर्म, वीर शैववाद, सिद्ध सिद्धांत जीर शिव अद्वैत जैसे प्रमुख सिद्धांत शामिल हैं। इन शैव उपधाराओं ने समाज को समय-समत पर प्रभावित किया और धार्मिक विविधता को बढ़ावा दिया। बिलासपुर जिला, छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तर-पश्चिमी हिस्से में स्थित शैव परंपराओं का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। यहां के शेव मंदिर और धार्मिक स्थल न केवल शैव सिद्धांतों के संरक्षण का माध्यम बने, बल्कि उन्होंने इन परंपराओं के प्रचार में नी अहम भूमिका निभाई। इस जिले में राज्य और समुदाय दोनों ने मिलकर शैव परंपराओं का संरक्षण किया और उन्हें समाज के जीवन का हिस्सा बना दिया। इस संदर्भ में, हम शैव परंपराओं के संरक्षण में राज्य और समुदाय की भूमिका का विश्लेषण करते हुए, बिलासपुर जिले में शैव सिद्धांतो और मंदिरों के महत्व को भी समझाने की कोशिश करेंगे।

शैव धर्म की विभिन्न शाखाएं और सिद्धांत समय के साथ विकसित हुई, जो भगवान शिव की पूजा और भक्ति को विभिन्न रूपों में व्यक्त करती है। शैव सिद्धात, पाशुपत शैव धर्म, कश्मीर शैव धर्म, वीर शैववाद, सिद्ध सिद्धांत और शिव अद्वैत जैसे सिद्धांतों ने न केवल धार्मिक जीवन को आकार दिया, बल्कि उन्होंने दार्शनिक विमर्श को भी प्रभावित किया। शैव सिद्धांत भगवान शिव को सर्वोच्चता ब्रह्म के रूप में मागता है जिसमें शिव सृष्टि, स्थिति और संहार के परम कारण के रूप में पूजे जाते हैं। पाशुपत शैव धर्म में भगवान शिव को पाशुपती (सभी जीवों के स्वामी) के रूप में पूजा जाता है, और इसमें साधक तंत्र साधना और ध्यान के माध्यम से शिव के आशीर्वाद प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। कश्मीर शैव धर्म का सिद्धांत शिव अग्रेत है, जिसमें शिव को परम सत्य और सर्वव्यापी ब्रह्मा के रूप में माना जाता है। वीर शैववाद, जिसे लिंगायत धर्म भी कहा जाता है. , दक्षिण भारत में विकसित हुआ और इसमें शिव के लिंग रूप की पूजा की जाती है., साथ ही सामाजिक असमानताओं की खिलाफ संघर्ष भी किया गया। सिद्ध सिद्धांत में शिव को ब्रह्म और आत्मा के अद्वितीय रूप में मानते हुए साधना और ध्यान के माध्यम से आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का प्रयास किया जाता है। शिव अद्वैत में आत्मा और शिव के बीच कोई भेद नहीं माना जाता, और साधक शिव के साथ एकात्मता प्राप्त करता है।

बिलासपुर जिले में शैव धर्म के विभिन्न सिद्धांतों को संरक्षित करने वाले कई महत्वपूर्ण शिव मंदिर हैं, जो गैव परंपराली के केंद्र के रूप में कार्य करते हैं। रघुनाथ मंदिर, रतनपुर तथा तालागांव का शिव मंदिर प्रमुख शैव स्थल है, जहां नियमित रूप से शिव पूजा और अन्य धार्मिक अनुष्ठान होते है। यह मंदिर शैव परपराओं का संरक्षक और प्रचारक रहा है। बिलासपुर शहर में स्थित शिव मंदिर भी शैव भक्तों के लिए एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है, जहां महाशिवरात्रि के दौरान भव्य पूजा और आयोजन होते हैं, जो शैव परंपराओं को जीवित रखते हैं। इन मंदिरों ने न केवल धार्मिक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया, बल्कि शैव सिद्धांतों के प्रचार और प्रसार का भी महत्वपूर्ण कार्य किया। इस प्रकार बिलासपुर जिले में शैव परंपराओं का संरक्षण राज्य और समुदाय के संयुक्त प्रयासों का परिणाम है, जिसमें शैव सिद्धांती और मंदिरों के माध्यम से धार्मिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक धारा को जीवित रखा गया

2. शैव संप्रदाय का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

शैव संप्रदाय, भगवान शिव की उपासना पर आधारित, भारतीय धर्म और संस्कृति का प्राचीन और महत्वपूर्ण अंग है। इसकी जड़े वेवी, उपनिषदों और पुराणों में हैं। पाशुपत शैव संप्रदाय, जिसकी स्थापना लकुलिश ने ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में की, शैव संप्रदाय का सबसे प्राचीन रूप है। उपनिषदों में शिव को ब्रम्हा या आदिशक्ति के रूप में वर्णित किया गया है, जो सृष्टि के रचनाकार, पालनकर्ता और सहायक है। शैव धर्म के कई संप्रदाय है जिनमें से छह है- शैवसिद्धांत, पाशुपत शैव धर्म, कश्मीर शैव धर्म, वीर शैववाद (वीरशैववाद), सिद्ध सिद्धांत (सिद्धसिद्धांत) शिव अद्वैत (शिवअद्वैत)

छत्तीसगढ़ के सिरपुर, डीपाडीह, भोरमदेव, मल्हार और तालागांव जैसे पुरातात्विक स्थल राज्य की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर को उजागर करते हैं। भोरमदेव मंदिर खजुराहो की शैली का है. जबकि बारसूर अपनी विशाल गणेश प्रतिमा के लिए प्रसिद्ध है। ये स्थल छत्तीसगढ़ की समृद्ध विरासत को दर्शाते हैं।

3. शैव परंपराओं के संरक्षण में राज्य और समुदाय की भूमिका

शैव परंपराओं के संरक्षण में राज्य और समुदाय की भूमिका शैव धर्म की रक्षा से जुड़ी हुई है। शैव धर्म को सुरक्षित रखने के लिए मठों, मंदिरों और श्रद्धालुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु अखाड़ों की स्थापना की गई थी। बाहरी आक्रमणों के समय स्थानीय शासकों ने नागा योद्धा साधुओं का सहयोग लिगा।

1) शैव धर्म की रक्षा के लिए मठों, मंदिरों और श्रद्धालुओं की सुरक्षा हेतु अखाड़ो का गठन किया गया।
2) बाहरी आक्रमणों के दौरान, स्थानीय राजा नाहाराजों ने नागा साधुओं की मदद ली।
3) अखाड़ों ने इन आक्रमणों के समय एक सुरक्षा कवच के रूप में कार्य किया।

4. शैव धर्म क्या है?

शैव धर्म हिंदू धर्म का एक प्राचीन रूप है. जो मुख्य रूप से भगवान शिव की पूजा और वंदना पर केंद्रित है। यह शब्द संस्कृत के शिव से लिया गया है, जिसका अर्थ है विनाश और परिवर्तन के देवता। शैव वे भक्त है जो शिव को सर्वोच्च देवता मानते है और उनका विश्वास है कि वे ही सूजन, संरक्षण और विनाश के लिए जिम्मेदार है। शिव को अक्सर एक ऐसे देवता के रूप में चित्रित किया जाता है, जिनमें विविध गुणों का मिश्रण होता है दृ एक और वे भयंकर विध्वंसक होते है, तो दूसरी ओर अपनी पत्नी पार्वती के लिए प्रेमपूर्ण और दयालु पति। शैववाद और शक्तिवाद हिंदू धर्म की दो प्रमुख धाराएं हैं, जो गहरे रूप से एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। शक्तिवाद देवी, शक्ति वा देवी की पूजा पर आधारित है, और कई लोग शिव और शक्ति को एक समग्र और पूरक ऊर्जा के रूप में देखते हैं, जो सृष्टि के अस्तित्व के लिए सामंजस्यपूर्ण तरीके से एक साथ काम करती है। इस प्रकार, इन दोनों परंपराओं के बीच एक महत्वपूर्ण ओवरलैप होता है, और कई शक्तिवादी परंपराएं शिव की भी पूजा करती है।

5. शैव परंपराओं के संरक्षण में राज्य की भूमिका

ब्रिटिश काल के पहले और बाद, राज्य ने शैव परंपराओं के संरक्षण में एक प्रमुख भूमिका निभाई। राज्य के शासकों ने धार्मिक संरचनाओं, मंदिरों और अनुष्ठानों की देखरेख की जिससे शैव धर्म की जड़े गहरी बनी। इस भूमिका में कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं का उल्लेख किया जा सकता है।

1) धार्मिक संरचनाओं का निर्माण और संरक्षण

राज्य ने शैव धर्म से जुड़ी कई महत्वपूर्ण मंदिरों की स्थापना की और उनका संरक्षण किया। बिलासपुर जिले में स्थित कई प्राचीन शिव मंदिर जैसे कि रतनपुर का रघुनाथ मंदिर और तालागांव के पास स्थित शिव मंदिर शैव परंपरा को बनाए रखने का उदाहरण है। इन मंदिरों को स्थानीय शासकों ने सशक्त बनाया और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए वित्तीय सहयोग प्रदान किया।

2) धार्मिक शासन और संरक्षण

राज्य ने न केवल मंदिरों का निर्माण किया, बल्कि इनका नियमित संचालन और पूजा पाठ शुनिश्चित करने के लिए पुजारियों और धार्मिक गुरुओं को सम्मानित किया। राज्य ने मंदिरों को दी जाने वाली भूमि और अन्य संसाधनों का सरंक्षण किया, जिससे शैव परंपरा को समाज में बनाए रखने में मदद मिली।

3) धार्मिक आयोजनों का प्रोत्साहन

राज्य ने विभिन्न शैव धार्मिक आयोजनों और पर्वो, जैसे महाशिवरात्रि और श्रावण मास के दौरान धार्मिक समारोहों का आयोजन किया, जो शैव परंपराओं के प्रचार और संक्षण में मददगार साबित हुए। आयोजन न केवल धार्मिकता को बढ़ावा देते थे, बल्कि सामाजिक एकता और सामूहिक संस्कृति को भी सुदृढ करते थे।

6. शैव परंपराओं के संरक्षण में समुदाय की भूमिका

समुदाय ने शैव परंपराओं के संरक्षण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समुदायों ने शैव धर्म की शिक्षाओं को न केवल जीवन में अपनाया, बल्कि इन परपराओं को पीढ़ी दर पीढ़ी भी संजोए रखा। बिलासपुर जिले के संदर्भ में समुदाय की भूमिका निम्नलिखित तरीकों से प्रकट होती है

1) स्थानीय अनुष्ठान और पूजा पद्धतियाँ

समुदाय ने शैव परंपराजों को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाया और इन परंपराओं को स्थानीय स्तर पर जीवित रखा। शैव भक्ति और अनुष्ठान, जैसे पशुपतिनाथ पूजा, शिवलिंग पूजन और नंदी पूजा को ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में प्रचलित किया गया।

2) समाज में धार्मिक शिक्षा का प्रसार

समुदाय के धार्मिक शिक्षक और पुजारी शव परवराजों की शिक्षा देते थे, जो न केवल मंदिरों में होते थे. बहिक समाज में घर-घर जाकर भी धर्म का प्रचार करते थे। इसके साथ ही. रात और महात्माओं ने शैव परंपराओं के महत्व को समद्वाया और लोक जीवन में उनके प्रभाम को बढ़ाया।

3) सांस्कृतिक गतिविधियाँ

समुदाय ने शैव परंपराओं को न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी संजोए रखा। शैव भक्तो ने लोकगीत, भजन और रचनाएँ बनाई, जो शैव धर्म की महिमा और इसके अद्वितीय पहलुओं को दर्शाती थी। बिलासपुर जिले में शैव भजन और कीर्तन सभाओं का आयोजन व्यापक रूप से होता था जो स्थानीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बन गए थे।

4) स्थानीय शैव मठों का संरक्षण

समुदाय ने कई शैव मठों और आश्रमों का निर्माण किया, जहां शिव के अनुयायी धर्म शिक्षा और साधना करते थे। इन मठों और आश्रमों ने शैव धर्म की शिक्षा के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और यह आज भी स्थानीय समुदाय में एक सांस्कृतिक केंद्र के रूप में कार्य करते हैं।

7. शैव परंपराओं का सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

बिलासपुर जिले में शैव परंपराओं का सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव बहुत गहरा था। शैव धर्म ने न केवल धार्मिक अनुष्ठानों और त्योहारों को प्रभावित किया, बल्कि समाज के विभिन्न पहलुओं को भी आकार दिया।

1) समाज में एकता और सामूहिकता

शैव परंपराएँ समाज में एकता और सामूहिकता को बढ़ावा देती थीं। मंदिरों में सामूहिक पूजा, भजन संकीर्तन और अन्य धार्मिक गतिविधियों समाज को जोड़ने का कार्य करती थीं। शैव धर्म ने जाति, वर्ग और सामाजिक भेदभाव के बावजूद एक साझा धार्मिक पहचान बनाई।

2) सांस्कृतिक धरोहर

शैव धर्म ने न केवल धार्मिक जीवन को प्रभावित किया, बल्कि कला, साहित्य और संगीत के माध्यम से भी समाज की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित किया। शैव धर्म से संबंधित मंदिर ने वास्तुकला और मूर्तिकला के अद्वितीय उदाहरण मिलते हैं, जो आज भी पर्यटन और सांस्कृतिक अध्ययन का केंद्र बने हुए हैं।

8. अध्ययन का उद्देश्य

1) शैव परपराओं के संरक्षण हेतु नीतियों और योजनाओं का निर्माण करना।
2) शैव अनुष्ठानों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से परपराओं को जीवित रखना।
3) शैव स्थलों और धार्मिक धरोहरों का संयुक्त रूप से संरक्षण और प्रचार करना।
4) शैव शिक्षाओ और सिद्धांतों को बढ़ावा देना।
5) शैव मंदिरों और ऐतिहासिक स्थलों का संरक्षण और उनकी मरम्मत सुनिश्चित करना।

9. अध्ययन क्षेत्र

बिलासपुर जिले का इतिहास लगभग 400 वर्षों पुराना है, और इसकी स्थापना कलचुरी शासकों द्वारा की गई थी। यह जिला मधुआरी महिला बिलासा बाई केवटीन के नाम पर नामित है। बिलासपुर, जो मैकल पर्वत श्रेणी के पूर्वी हिस्से में स्थित है, प्राकृतिक संसाधनों से संपन्न है। इसका उत्तरी अक्षांश 21.470 23.80 और पूर्वी देशांतर 81.140 से 83.150 के बीच फैला हुआ है। इस जिले का गठन 1861 में हुआ था. जब यह मध्यप्रांत का हिस्सा था और 1956 में देश की स्वतंत्रता के बाद इसे एक संभाग के रूप में स्थापित किया गया। बिलासपुर संभाग में कुल आठ जिले शामिल है। जिले का कुल क्षेत्रफल लगभग 3508.48 वर्ग किलोमीटर है और यहां की जनसख्या लगभग 16.25.502 है।

10.शोध का समस्या विवरण

इस शोध का उदेश्य यह समझना है कि कैसे राज्य और समुदाय में मिलकर शेष परपराओं का संरक्षण किया है विशेषकर बिलासपुर जिले में। राज्य और समुदाय दोनों के स्तर पर शैव परपराओं की उपेक्षा और संरक्षण की प्रक्रियाओं का विश्लेषण करते हुए यह सवाल उठता है कि-

- शैव परंपराओं के संरक्षण में राज्य की क्या भूमिका रही है?
- शैव परंपराओं के सत्क्षण में स्थानीय समुदाय का योगदान क्या रहा है?
- समय के साथ शैव धर्म की परपराओं में कौन से प्रमुख बदलाव आए है और क्या इन बदलावों ने शैव धर्म के वास्तविक रूप को प्रभावित किया है?
- बिलासपुर जिले के धार्मिक स्थलों और मंदिरों में शैव धर्म का संरक्षण किस तरह से हुआ है और इन स्थलों ने स्थानीय धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन में क्या भूमिका निभाई है?

11.निष्कर्ष

बिलासपुर जिले में शैव परंपराओं का संरक्षण राज्य और समुदाय दोनों की सक्रिय भागीदारी पर निर्भर है। राज्य में ऐतिहासिक शैव स्थलों मंदिरों और धार्मिक धरोहरों में संरक्षण के लिए विभिन्न नीतियों और योजनाओं का निर्माण किया है। वहीं, समुदाय मे अनुष्ठानों, उत्सव और धार्मिक आयोजनों के माध्यम से इन परंपराओं को जीवित रखने में अपना योगदान देता है। बिलासपुर जिले के प्रमुख शैव स्थलों जैसे विभिन्न शिव मंदिरों और ऐतिहासिक स्थलों, का संरक्षण राज्य और समुदाय के साझेे प्रयासों से संभव हो सकता है। राज्य यदि पर्यटन और सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा दे, तो इस क्षेत्र को धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से समृद्ध किया जा सकता है। साथ ही, स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी इन परंपराओं के संरक्षण और प्रसार के लिए बेहद आवश्यक है। इस प्रकार, शैव परंपराओं के संरक्षण के लिए राज्य और समुदाय का समन्वित प्रयास अत्यंत महत्वपूर्ण है, ताकि इन धरोहरों को भविष्य की पीढ़ियों तक सुरक्षित रखा जा सके और इस क्षेत्र की सांस्कृतिक धारा निरंतर प्रवाहित रहे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

https://vikramuniv.ac.in/files/wp-content/uploads/M.A. jyotirvigyan 2nd sem. Shaiv Darshan Dr. R.Shastri Mu salgaonkar.pdf

चीजे रश्मि (2013) भारतीय समाज व संस्कृति का विघटन व वैश्वीकरणण् Research Journal Humanities and Social Sciences, 4(1): 4;1 पृष्ठ क्रमांक - 54

https://www.uou.ac.in/sites/default/files/slm/BASO-102.pdf

शर्मा कविता (2020) शैव धर्म एवं उसका विकास Internatioal Journal of Hindi Research, 6(6): पृष्ठ क्रमांक - 154

प्रियादर्शी अर्चना ;2021द्ध दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में शैव सम्प्रदाय का उद्भव एवं विकास Jouranl of Emerging Technologies and Innovative Research, 8(6): पृष्ठ क्रमांक – 8%430

https://www.britannica.com/topic/Shiva

https://www.wisdomlib.org/definition/shaivism

https://rkarts.blogspot.com/2016/01/blog-post 23.html

मिधा सीमा और मिश्रा चंदन कुमार (2022) उत्तर भारत में शेव धर्म के विकास का इतिहास प्रारम्भ से गुप्त काल तक. शोध प्रबंध बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, पृष्ठ क्रमांक-35.

https://study.com/academy/lesson/shaivism-overview-origin-beliefs.html

https://www.wisdomlib.org/definition/shaivism

https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/73995/1/Unit-14.pdf

https://ebooks.inflibnet.ac.in/icp03/chapter/77/

निकुलेस्कु सेविका मारियाना और नोरेल मारियाना (2013), धार्मिक शिक्षा मानव की शिक्षा का एक महत्वपूर्ण आयाम है. Procedia- Social and Behavioral Sciences, 93: पृष्ठ क्रमांक-339. 15. https://www.tandfonline.com/doi/full/10.1080/01416200.2020.1754164#abstract

कुमारी सुबिता, एट आॅल ;2014द्ध विश्वशांति में धार्मिक सहिष्णुता का योगदान Explore-Journal of Research for UG and PG students, 6 i`"B dzekad & 70

https://www.scielo.org.za/scielo.php?script=sei arttext&pid=S0259-942220-22000-400008

https://bilaspur.gov.in/en/